VRINDAVAN Books International

BASED ON
NEP/NCF

संस्कृत निकुंज

Teacher's Manual

द्वितीया

Vrindavan Books International
New Delhi

पहला पाठ : मित्रता

द्वितीया

संकेत : महर्षि सान्दीपनि-आश्रमे ....मैत्री आसीत्।

अर्थ–महर्षि सान्दीपनि के आश्रम में अनेक शिष्य पढ़ते थे। उन शिष्यों में श्रीदामा–कृष्ण नाम के दो मित्र थे। उनमें श्रीदामा निर्धन परिवार का बालक था। किंतु कृष्ण धनी वसुदेव अथवा यशोदा का पुत्र था। श्रीदामा और कृष्ण में गहरी मित्रता थी।

संकेत : पूर्ण शिक्षां -----------------------जीविका आसीत्।

अर्थ–शिक्षा पूरी करके वे दोनों अपने–अपने घर लौटे। तब भी उनकी मित्रता अथवा प्रीति कम नहीं हुई। युवावस्था आने पर कृष्ण द्वारिका के राजा हुए किंतु श्रीदामा निर्धन ब्राह्मण ही रहे। वे भिक्षा के लिए दर–दर घूमते थे और भिक्षा माँगते थे। भिक्षा ही उसकी आजीविका थी।

संकेत : एकदा श्रीदामा ------------------सर्ववृत्तान्तम् अकथयत्।

अर्थ–एक बार श्रीदामा ने पत्नी को बताया–'हे प्रिये! द्वारिका का राजा कृष्ण मेरा सहपाठी और मित्र है।'

उस वचन को सुनकर वह बोली–''स्वामी! धन के अभाव में मैं दुखी हूँ। श्रीकृष्ण धनी और दीनबंधु हैं। द्वारिका जाओ। धन लाओ।'' उसने इस तरह बार–बार प्रार्थना की। पत्नी का निवेदन जानकर श्रीदामा द्वारिकापुरी गया। राजद्वार पर द्वारपाल ने रोका। श्रीदामा ने द्वारपाल को अपना परिचय दिया। उसका परिचय जानकर वह आश्चर्यचकित हुआ कि 'यह फटे–पुराने कपड़े पहनने वाला ब्राह्मण द्वारिकाधीश का मित्र होगा। अतः वह विस्मय से श्रीकृष्ण के पास उपस्थित हुआ। द्वारपाल ने श्रीकृष्ण को समस्त सूचना कही।

संकेत : 'श्रीदामा' इति ----------------------------समपर्यत्।

अर्थ–'श्रीदामा' यह नाम सुनकर द्वारिकाधीश (अपने) नंगे पैर से शीघ्रतापूर्वक राजद्वार पर उपस्थित हुए और हाथों को फैलाकर श्रीदामा का आलिंगन किया।

मित्र की दशा देखकर श्रीकृष्ण ने अपने मित्र के लिए राजसम्मान, वस्त्र आदि दिए। मित्र के समस्त मनोरथ जानकर मनोनुरूप यथाइच्छित द्रव्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में समर्पित किया।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	धनिकौ	
	धनिकौ	
धनिकेन		धनिकैः
धनिकाय	धनिकाभ्याम्	
द्वारिकाधीशः		द्वारिकाधीशाः
	द्वारिकाधीशौ	द्वारिकाधीशान्
द्वारिकाधीशेन	द्वारिकाधीशाभ्याम्	
द्वारिकाधीशाय		द्वारिकाधीशेभ्यः

2. (क) सन्दीपनि आश्रमे।
   (ख) श्रीदामा सह
   (ग) द्वारिकायाः नरेशः।
   (घ) श्रीदामस्य।
   (ङ) द्वारपालः।
3. (क) श्रीदामा निर्धनकुटुम्बः कृष्णस्य च धनिक कुटुम्बस्य बालौ आस्ताम्।
   (ख) युवावस्थां प्राप्य श्रीदामा द्वारे-द्वारे भिक्षाटंन करोति स्म।
   (ग) ''स्वामी! धनाभावे अहं दुःखिता अस्मि। द्वारिकां गच्छ। धनम् आनय।''
   (घ) भार्यायाः निवेदनं विज्ञाय श्रीदामा द्वारिकापुरीम् अगच्छत्।
   (ङ) 'श्रीदामा' इति नाम ज्ञात्वा कृष्णः नग्नपादाभ्यां झटिति राजद्वारम् उपस्थितः अभवत् श्रीदामालिंगनं च अकरोत्।
4. (क) श्रीदामा ; द्वारिकाधीशः ; सखा ; सा
   (ख) दशां ; स्वमित्राय ; सर्वमनोज्ञं ; यथोप्लसितं ; प्रत्यक्षेण अप्रत्यक्षेण रूपेण।
5. (क) तेषु शिष्येषु श्रीदामा-कृष्णौ नाम द्वे मित्रौ आस्ताम्।
   (ख) श्रीदामा निर्धन विप्रः अभवत्।
   (ग) भिक्षाः एव तस्या जीविका आसीत्।

(घ) द्वारिकां गच्छ। धनम् आनय।

(ङ) द्वारपालः श्रीकृष्णं सर्ववृत्तान्तम् अकथयत्।

6. (अ) (क) सः भिक्षाम् याचतु।

(ख) सः भिक्षायै द्वारात्-द्वारे भ्रमतु।

(ग) द्वारपालः श्रीदामाम् अवरोधयतु।

(घ) श्रीकृष्ण हस्तौ प्रसार्य श्रीदामालिंगनम् करोतु।

(ब) (क) आश्रमे शिष्याः अपठन्।

(ख) ते निर्धनाः अभवन्।

(ग) तान् वचनान् श्रुत्वा ते अवदन्।

(घ) द्वारिकां गच्छत।

(ङ) द्वारपालाः सर्ववृत्तान्तम् अकथयन्।

7.

विभक्ति		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)	चतुर्थी		द्वारपालाभ्याम्	
(ख)	प्रथमा		कृष्णौ	कृष्णाः
(ग)	प्रथमा		द्वारपालौ	
(घ)	तृतीया			कृष्णेभ्यः
(ङ)			द्वारपालौ	द्वारपालान्!
(च)		कृष्णाय		कृष्णेभ्यः

दूसरा पाठ :

राजकुमार सिद्धार्थ

संकेत : पुरा शुद्धोदनः ------------------------------चासीत्।

अर्थ–प्राचीन काल में शुद्धोदन नाम का कोई राजा था। उसकी कौशलदेश राजधानी थी। शुद्धोदन के अकेले पुत्र का नाम सिद्धार्थ था। राजकुमार स्वभाव से दयालु और विनम्र था।

संकेत : एकदा राजकुँवरः ----------------------------कुर्वन्ति स्म।

अर्थ–एक दिन राजकुमार सिद्धार्थ बगीचे में गया। यह बगीचा सुंदर और मनोहारी था। अनेक पक्षी वहाँ कूजते/चहचहाते थे। वे पेड़ से (दूसरे) पेड़ पर उड़ते और कलरव करते थे।

संकेत : उद्याने एकं ----------------------------कुर्वन्ति स्म।

अर्थ–बगीचे में एक जलाशय था। वहाँ बहुत से राजहंस स्वच्छन्द घूमते थे। उनमें कुछ भूमि पर कुछ पेड़ों पर क्रीड़ा करते थे।

संकेत : उपवनस्य शोभा --------------------------स्वस्थः अभवत्।

अर्थ–बगीचे की शोभा देखकर राजकुमार सिद्धार्थ अत्यन्त प्रसन्न हुआ। अचानक एक राजहंस आकाश से सिद्धार्थ के पास जमीन पर गिरा। वह बाण से घायल था। वह राजहंस पीड़ा से करुण क्रंदन कर रहा था। हंस को देखकर सिद्धार्थ भी दया–द्रवित हो गया। वह उस हंस को तालाब के किनारे लाया। उसका घाव साफ जल से धोया। उसकी सेवा अथवा स्नेह से वह हंस स्वस्थ हो गया।

संकेत : तस्मिन्नैव काले ----------------------- अयं मम हंसः।

अर्थ–उसी समय देवदत्त वहाँ आ पहुँचा। उसने सिद्धार्थ से कहा–''यह हंस मुझे दे दो।''

सिद्धार्थ–''यह हंस मेरा है। मैं इस हंस को नहीं दूँगा।''

देवदत्त–''यह हंस मेरे बाण से घायल हुआ है, अतः हंस मेरा है।''

सिद्धार्थ–''मैंने इसकी रक्षा की है, यह हंस मेरा है।''

संकेत : एवं बहुविवादः ------------------------सिद्धार्थस्य अस्ति।

अर्थ–इस प्रकार बहुत झगड़ा हुआ। दोनों न्यायाधीश के पास गए। और अपने–अपने पक्ष को कहा। न्यायाधीश ने निर्णय किया।

न्यायाधीश – ''रक्षक भक्षक से महान (बड़ा) होता है। इसलिए यह हंस सिद्धार्थ का है।''

अभ्यास

1. (ब)	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		शुद्धोदनाभ्याम्	
		शुद्धोदनयोः	शुद्धोदनानाम्
	शुद्धोदने		शुद्धोदनेषु
	हे शुद्धोदन!	हे शुद्धोदनौ	
		देवदत्ताभ्याम्	
		देवदत्तयोः	
	देवदत्ते		
		हे देवदत्तौ	

2. (क) कोशल देशः। (ख) शुद्धोदनस्य।
(ग) सिद्धार्थः (घ) बाणेन
(ङ) न्यायाधीशस्य समक्षम्।

3. (क) राजकुँवरः सिद्धार्थः स्वभावेन दयालुः विनम्रः चासीत्।
(ख) उपवने अनेकाः खगाः कूजन्ति स्म। **ते विटपात्-विटपे उड्डन्ति स्म।**
उद्याने राजहंसा विचरन्ति स्वच्छंदः।
(ग) राजहंसाः वृक्षेषु क्रीडां कुर्वन्ति।
(घ) न्यायाधीशः निर्णयम् अकरोत्–''रक्षकः भक्षकात् प्रशस्यतरः भवति!

4. (क) पुत्रस्य (ख) इदम्
(ग) काले (घ) रक्षाम्

5. (क) शुद्धोदनस्य (ख) विटपे
(ग) खात् (घ) वृणं

6. (क) (यूयं) उच्चैः वदत।
(ख) (यूयं) तूष्णीं तिष्ठत।
(ग) (यूयं) चित्रं पश्यत।
(घ) (यूयं) श्लाघनीयं लिखत।
(ङ) (यूयं) आयुष्मान भवत।

7. (ख) (i) अलं कूजनेन
(ii) अलं चिंतनेन।
(iii) अलं कलहेन
(iv) अलं हसितेन
(v) अलं कोलाहलेन

तीसरा पाठ :

पुल टूट गया

संकेत : बीहट ग्रामस्य ------------------------------------भवति स्म।

अर्थ–बीहट ग्राम के पास एक नदी बहती थी। उसके ऊपर रेलवे पुल था। उस पर रेलगाड़ी का आवागमन होता था।

संकेत : तस्य धूम्रयानसेतुं ----------------------------आसीत्।

अर्थ–उस रेलवे पुल के पास में एक झोपड़ी में एक बुढ़िया अपनी पौत्री के साथ रहती थी। वह बुढ़िया अति दरिद्रा किंतु समाज सेविका थी।

संकेत : एकदा मेघाच्छन्नः ----------------------------अभवताम्।

अर्थ–एक समय बादलों से घिरी हुई तूफान भरी रात आई। वर्षा के जल से नदी में उफान आ गया। सहसा कानों को फाड़ देने वाला विस्फोट हुआ। बुढ़िया के मन में संदेह उत्पन्न हो गया। उसने देखा–'पुल टूट गया है।' रेलगाड़ी की दोनों पटरियाँ लटक गई हैं।

संकेत : सा वृद्धा -------------------------------भविष्यति।

अर्थ–उस बुढ़िया ने अपनी पौत्री से कहा–''पुत्री! रेलगाड़ी आधा घंटे बाद इधर आएगी। पुल के ऊपर जैसे ही वह आएगी क्षण भर में ही नदी के जल में गिर जाएगी और पानी में डूब जाएगी। इससे बहुत से नागरिकों की मृत्यु हो जाएगी।

संकेत : पौत्री अवदत् ---------------------- अति आवश्यकम्।''

अर्थ–पौत्री ने कहा –''नानी जी! इस संकट के समय अथवा वेला में भय मत करो। 'सही उपाय करने से सभी सम्भव है।' मैंने पुस्तक में पढ़ा है कि यह रेलगाड़ी लाल रंग के संकेत से रुकती है। मेरे पास एक लाल कपड़ा है। यहाँ रोशनी की व्यवस्था अति आवश्यक है।

संकेत : सा वृद्धा अवदत् ----------------------अददात्।

अर्थ–वह बुढ़िया बोली – 'घर में सूखी लकड़ियाँ नहीं हैं। अतः कैसे आग जलाऊँ?'' वह बुढ़िया फिर बोली,–'मेरे पास/मेरी खाट का पाया सूखा है। अतः उसे जला देती हूँ।'' खाट के पाये को जलाकर वे दोनों पुल के ऊपर आकर उस मार्ग पर जाने लगीं जिस मार्ग से रेलगाड़ी आती है। रेलगाड़ी के संचालक (ड्राइवर) ने दोनों को देखा। उसने रेलगाड़ी की चाल को रोक दिया। समस्त घटना को जानकर वह प्रसन्न हुआ। रेलवे विभाग ने दोनों को बहुत–सा पुरस्कार दिया।

अभ्यास

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1.	(ब)	वृद्धा		
			वृद्धे	

वृद्धया		वृद्धाभिः
	वृद्धाभ्याम्	
		दरिद्राः
	दरिद्रे	दरिद्राः
	दरिद्राभ्याम्	
दरिद्रायै		दरिद्राभ्यः

2. (क) बीहटग्रामस्य। (ख) एका वृद्धायाः।
   (ग) वृद्धयामनसि। (घ) सेतु
   (ङ) धूम्रयानम्।
3. (क) धूम्रयानस्य आवागमनं सेतवे आसीत्।
   (ख) नद्यायां जल प्लावनेन सेतुः भग्नः अभवत्।
   (ग) सा अपश्यत् – सेतुः भग्नः अभवत्।
   (घ) पौत्री अवदत्–मातामही! अस्मिन् संकटकाले वेलायां वा भयं मा कुरु। (सम्यकोपायेन सर्वं संभव भवति। अं पुस्तके अपठम् पत् इयं लौहपाथगामिनी रक्तवर्णसंकेतेन तिर्षति। मम समीपे एकं रक्तवस्त्रम् अस्ति। अत्र प्रकाश व्यवस्था अति आवश्यकम!।)
   (ङ) मातामही पौत्री द्वयोः सम्यक् कार्येण दुर्घटना न अभवत्।
4. (क) समीपे ; वृद्धा ; न्यवसत् ; समाज–सेविका।
   (ख) खट्वापादं ; आगच्छताम् ; लौहपथगामिनी।
5. (क) सा वृद्धा अवदत्।
   (ख) सा वृद्धाः अति दरिद्रा किन्तु समाज सेविका आसीत्।
   (ग) अनेन बहवः नागरिकानां प्राणनाशं भविष्यति।
   (घ) सा वृद्धा पुनः अवदत्।
   (ङ) समस्त घटनां ज्ञात्वा सः प्रसन्नः अभवत्।
6. (अ) (क) ग्रामस्य समीपे नदी वहतु।
   (ख) सेतवे धूम्रयानानां आवागमनं भवतु।
   (ग) सा पश्यतु।
   (घ) सः वदतु।

(ब) (क) नद्याः अवहन्।

(ख) ताः वृद्ध अति दरिद्राः आसन्।

(ग) सेतवः भग्नाः अभवन्।

(घ) वयं पुस्तकेषु अपठाम।

(ङ) सर्वकारैः तां पुरस्कारं अददात्।

7.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)			वर्षाभ्यः
(ख)		सेतू	सेतवः
(ग)		वेले	वेलाः
(घ)		रमाभ्याम्	रमाभिः
(ङ)		संचालिके	संचालिका
(च)	उभया		

चौथा पाठ :

बातचीत

(प्रथम दृश्य)

नवीन – मातंगी! नमस्ते!

मातंगी – सुबह की नमस्ते, नवीन!

नवीन – तुम कहाँ जा रही हो?

मातंगी – मैं विद्यालय जा रही हूँ। आज हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव है। तुम कहाँ जा रहे हो।

नवीन – मैं इस समय बाजार जा रहा हूँ। आज हमारे घर कुछ आगन्तुक आएँगे। उनके अतिथि सत्कार के लिए फल और मिष्ठान्न लाऊँगा।

मातंगी – अतिथि सेवा ही देव सेवा होती है। हमारे अध्यापक भी ऐसा ही कहते हैं कि जो लोग माता-पिता, गुरुओं अथवा वृद्धों की सेवा करते हैं वे अवश्य ही सफल होते हैं।

नवीन – तब तो मन, वचन (और) कर्म से सेवा करनी चाहिए।

मातंगी – मैं भी (इस) सत्य वाक्य को स्वीकार करूँगी। तुम कब पाठशाला जाओगे?

नवीन – मातंगी! मैं तो तीन दिन बाद विद्यालय जाऊँगा।

मातंगी – तुम यहाँ तीन दिन तक क्या करोगे?

नवीन – मातंगी! मैं विद्यालय का गृहकार्य पूर्ण करूँगा। तुम घर से कब चलती हो?

मातंगी – मैं घर से साढ़े छह बजे चलती हूँ।

नवीन – मातंगी! इस समय विलम्ब हो रहा है। अतः शीघ्र ही बाजार से खरीदी वस्तुओं को लेकर घर जाऊँगा। मैं चलता हूँ।

(नवीन जाता है। मातंगी भी जाती है)

(द्वितीय दृश्य)

नवीन – महोदय! आइए। आइए महोदय!

आगन्तुक– ठीक है तुम्हारा कल्याण (भला) हो। तुम्हारे पिताजी कहाँ हैं?

नवीन – महोदय! सोफा पर बैठिए। मेरे पिता शीघ्र आएँगे। जल पीजिए। (आगन्तुक पानी पीता है)

नवीन – मेरे पिता आ गए। पिताजी! ये महोदय आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। (आगंतुक से) यह मेरे पिताजी हैं। मैं जाता हूँ पढ़ाई करूँगा। (नवीन जाता है)।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	सेवाभ्याम्	
	सेवाभ्याम्	सेवानाम्
सेवायाम्		सेवासु
हे सेवे!	हे सेवे!	

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कक्षायाः	कक्षाभ्याम्	कक्षाभ्यः
कक्षायाः	कक्षाभ्याम्	
कक्षायाम्		कक्षासु
हे कक्षे!	हे कक्षे!	

2. (क) पाठशालां। (ख) आपणं।
(ग) नवीनस्य गृहे। (घ) त्रिदिवसोपरान्ते।
(ङ) जलं

3. (क) अहम् इदानीम् आपणं गच्छामि।
(ख) मातंगी, अतिथि-सेवा देवसेवा मन्यते।
(ग) त्रीणि दिवसानि यावत् नवीनः गृहकार्यं सम्पादयति।
(घ) आगम्यताम् महोदय! आगम्यताम्।
(ङ) अहं गच्छामि अध्ययनं करिष्यामि।

4. (क) त्वं कुत्र गच्छसि?
(ख) त्वं कदा पाठशालां गच्छसि?
(ग) अतिथि सेवा एव देवसेवा भवति।
(घ) अहं पाठशालायाः गृहकार्यं संपादयिष्यमि।

5. (अ) (क) पाठशालां (ख) अवधारयिष्यामि
(ग) गृहात् (घ) पिब
(ङ) पीठासने
(ब) (क) (यूयं) चिरं जीवत! (ख) (यूयं) शीघ्रं गच्छत।
(ग) (यूयं) गृहं गच्छत। (घ) (यूयं) ईश्वरं भजत।
(ङ) (यूयं) प्रार्थना कुरुत।

6. (अ) (क) रामेण (ख) अध्ययनेन
(ग) विद्यया (घ) अतिथि सेवया
(ब) (क) परिश्रमं (ख) कृपां
(ग) पुस्तकं (घ) अस्त्रं
(स) (क) धर्मात् (ख) नरेशात्
(ग) अध्ययनात्

पाँचवाँ पाठ :

बंदर की दुष्टता

संकेत : वैलूरपुरग्रामे -----------------------------पुष्टम् अभवत्।

अर्थ—वैलूरपुर गाँव में दिवाकर नाम का किसान रहता था। एक समय उसने एक बंदर पाला। कुछ समय के बाद वह बंदर बहुत-सा अन्न खाकर अति तंदुरुस्त हो गया।

संकेत : एकदा कृषीवलः -------------------- उपविष्टः अभवत्।

अर्थ—एक बार किसान दिवाकर दध्योदन (दही और चावल का बना खाद्य पदार्थ) लेकर किसी कार्य से बन्दर के साथ दूसरे गाँव की ओर चला। और रास्ते में एक नदी देखकर वहीं दध्योदन खाने के लिए बैठ गया। वह वहाँ किसी वृक्ष की जड़ में दही-चावल रखकर हाथ-मुँह धोने के लिए नदी पर जाकर नदी के किनारे बैठ गया।

संकेत : अत्रान्तरे तेन ----------------------------अजः मृतः।

अर्थ—इधर (इसी समय) उस दुष्ट बंदर ने वह सभी दध्योदन खा लिया। पुनः हाथ से कुछ दही लेकर समीप में स्थित बकरे के मुँह पर लगाकर/लपेटकर 'जैसे कुछ नहीं जानता' दूर जाकर बैठ गया। किसान दिवाकर हाथ-मुँह धोकर वृक्ष के जड़ (के पास) में आकर देखता है—'सारा दध्योदन किसी ने निपटा दिया है। समीप में स्थित बकरे के मुख को देखकर—'इसके द्वारा ही सम्पूर्ण अन्न खाया गया है' ऐसा मानकर पीटा। इससे बकरा मर गया।

संकेत : दुष्टजनाः ----------------------------निर्णयं कुर्वन्ति।

अर्थ—दुष्ट लोग अपराध करके 'दूसरे ने यह अपराध किया है' ऐसा दर्शाते हैं। मूर्ख लोग घटना की वास्तविक स्वरूपता को न जानकर संकीर्ण बुद्धि से ही निर्णय करते हैं।

अभ्यास

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1. (ब)	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		वृक्षे	
	वृक्षम्		
			वृक्षैः
	वृक्षाय	वृक्षाभ्याम्	
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
			अपराधानि
		अपराधे	

अपराधै

अपराधाय

2\. (क) वैलूरपुरग्रामे। (ख) वानरेण सह।

(ग) दुष्टेन वानरेण। (घ) हस्तमुखौ प्रक्षालनार्थं

(ङ) अजमुखे।

3\. (क) वानरः प्रभूतम् अन्नं खादित्वा अतिपुष्टम् अभवत्।

(ख) दिवाकरः हस्तमुखौ प्रक्षालनार्थं नदीस्तीरम् अगच्छत्।

(ग) वानरः स्वकृतापराधं अजोपरि स्थापितम् अकरोत्।

(घ) वानरस्य कृत दुष्कृत्येन अजः मृतः।

4\. (क) वानरः ; अन्नम् (ख) नदीम् ; दध्योदनम्

(ग) दुष्टेन ; भक्षितम् (घ) दिवाकरः ; मूलम्

5\. (क) ग्रामं (ख) हस्तमुखौ

(ग) अजः (घ) अन्येन्

(ङ) बुद्धे

6\. (I)

	पालयन्ति
पालयसि	पालयथ
पालयामि	पालयामः

(II)

	अपालयन्
अपालय	अपालयत्
अपालयम्	अपालयाम्

(ब) (क) सः एकं वानरं अपालयत्।

(ख) दिवाकरः नदीस्तीरे अतिष्ठत्।

(ग) सः वृक्षस्य मूलं समागत्य अपश्यत्।

(घ) दिवाकरः दण्डेन अदण्डयत्।

(ङ) सा ग्रामं अगच्छत्।

7\. (क) एकम् (ख) एकाम्

(ग) अन्य (घ) सर्वं

(ङ) निशेषं

छठा पाठ :
पाँच मूर्ख

संकेत : केरलप्रान्ते --------------------------------समर्थाः अभवन्।

अर्थ–केरल प्रान्त में पाँच मूर्ख रहते थे। जिस किसी तरह से उनके दिमाग में थोड़ा ज्ञान आया। इससे वे संख्या (गिनने) के ज्ञान में समर्थ हुए।

संकेत : ते स्नानाय --------------------------- अपि अकूर्दत्।

अर्थ–एक अवसर पर वे गंगा के किनारे गए। उनकी टोली का नायक गोविंद्र था। गंगातट पहुँचकर गोविंद्र बोला–''हम सभी (मौजूद) हैं अथवा नहीं' यह जानने के लिए मैं क्रम से संख्या सहित पानी में भेजता हूँ।'' ऐसा कहकर–एक, दो, तीन, चार संख्याओं को गिना। पुनः स्वयं 'पाँच' कहकर वह भी कूद गया।

संकेत : स्नानं कृत्वा ------------------------ चिंतामग्नः अभवत्।

अर्थ–स्नान करके वे पुनः नदी के किनारे पर पहुँचे। तब टोलीनायक ने पुनः गिनती की–एक, दो, तीन और चार। यहाँ पाँचवाँ कहाँ गया। यह कहकर वह चिंता में पड़ गया।

संकेत : गोविंद्रः अवदत् ----------------------- दुःखकारणम्?।

अर्थ–गोविंद्र बोला–''हम सब पाँच युवक थे, अब चार युवक हैं। एक युवक नहीं है।'' उसके साथ सभी युवक शोकमग्न हो गए।

तभी कोई राहगीर वहाँ आया। उन शोकमग्न युवकों को देखकर वह बोला–''तुम सब के दुख का क्या कारण है?''

संकेत : गोविंद्रः अवदत् ------------------------- प्रत्यागच्छन्।

अर्थ–गोविंद्र बोला–''हम पाँच युवक स्नान करने के लिए गंगा के किनारे आए थे। अब हम चार हैं। एक युवक कहाँ गया?''

राहगीर ने उन युवकों को गिना। युवकों को गिनकर वह हँसा। तब वह गोविंद्र से बोला–तुम सब पाँच ही हो। जब तुम युवकों को गिन रहे थे तब स्वयं को नहीं गिनते। पाँचवें युवक तुम हो।''

'हम सब युवक कुशल हैं' यह जानकर वे सब युवक प्रसन्न हुए। उन्होंने राहगीर को धन्यवाद करके अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	गंगातटाभ्याम्	
गंगातटस्य		
		गंगातटेषु:

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	ज्ञानाभ्याम्	
		ज्ञानानाम्
ज्ञाने		

2. (क) संख्या ज्ञाने। (ख) गोविंद्र:
   (ग) नद्यातटम् (घ) सर्वे युवका:।
   (ङ) आत्मानं।

3. (क) पंचमूर्खा स्नानार्थं गंगातटम् अगच्छन्।
   (ख) 'पंचम: युवक: कुत्र गत:' इतिज्ञात्वा पंचमूर्खा: चिंतामग्ना: अभवन्।
   (ग) गोविंद्र मार्गगामीम् अवदत्–'वयं पंचयुवका: स्नानार्थं गंगातटे आगच्छम। इदानीं चत्वार: एव स्म:। एक युवक: कुत्रगत:?
   (घ) 'वयं सर्वे युवका: कुशला: स्म:' इति विज्ञाय पंचमूर्खा: प्रसन्ना: अभवन्।

4. (क) मस्तकेषु ; प्रसारित: (ख) गोविंद्र
   (ग) वा ; क्रमेण ; जले (घ) पंचयुवका:
   (ङ) पंचैव

5. (क) स्नानाय (ख) तेन
   (ग) स्नानार्थं (घ) अगणय
   (ङ) कुशला:

6. (अ) (i)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
निवसति		निवसन्ति
निवससि		निवसथ
निवसामि		निवसाम:

(ii)	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	न्यवसत		न्यवसन्
		न्यवसः	न्यवसत
		न्यवसम्	न्यवसाम

(ब) (क) तेषां टोलीनायकः गोविंद्रः आसीत्।

(ख) गोविंद्रः 'पंच' कथयित्वा सः अपि कूर्दति।

(ग) इति कथयित्वा सः चिंतामग्नः भवति।

(घ) सः तान् शोकमग्नान् युवकान् दृष्ट्वा वदति।

(ङ) पथिकस्य धन्यवादं कृत्वा ते प्रत्यागच्छन्ति।

7. (क) पंच (ख) सर्वे

(ग) तस्य (घ) गभीरे

(ङ) टोलीनायकः

सातवाँ पाठ :

बटुआ

संकेत : जालंधर नगरस्य ----------------नेत्रस्फुटित जलेन सह।

अर्थ—जालंधर नगर के पास कभी वैदनपुरम् नाम का कोई गाँव था। उस गाँव में एक निर्धन परिवार रहता था। उस परिवार में रॉबर्ट नाम का अकेला पुत्र था। एक बार रॉबर्ट जंगल में पेड़ के नीचे बहते हुए आँसुओं के साथ रो रहा था।

संकेत : वने तत्समये -------------------- कारणम् अपृच्छत्।

अर्थ—वन में उसी समय कोई शिकारी वहाँ आया। उसको देखकर शिकारी ने बड़ी आत्मीयता से उसके रोने का कारण पूछा।

संकेत : रॉबर्टः अवदत् -------------------------एव आसीत्।

अर्थ—रॉबर्ट बोला—"मेरी माता बहुत समय से बीमार हैं। मेरे पिता ने मुझे दवाइयाँ खरीदने के लिए धन देकर भेजा। रास्ते में किसी जगह मेरा बटुआ (purse) गिर गया। समस्त धन (पैसा) उसी में था।"

संकेत : दयया द्रवीभूतः ----------------------तु स्वर्णपणाः।"

अर्थ—दया से द्रवीभूत हुए उस शिकारी ने अपनी जेब से एक रेशम के धागों से

बना बटुआ खोला। उस बटुए में सोने के सिक्के थे।

शिकारी ने बटुआ दिखाते हुए कहा–''अरे बालक! क्या यह बटुआ तुम्हारा है?''

रॉबर्ट बोला–''नहीं, मेरे पास में तो छोटा बटुआ था और उसमें पैसे थे, न कि सोने के सिक्के।''

संकेत : ''पुनः च इयं -------------------------- समर्पयत्।

अर्थ–''और यह वाला बटुआ?'' शिकारी ने दूसरा बटुआ दिखाते हुए पूछा।

''हाँ, यह है।'' उसने प्रसन्न होते हुए कहा,–'यह चमड़े से बना बटुआ मेरा है।''

शिकारी उसकी सत्यनिष्ठा से प्रसन्न हुआ। उसने रॉबर्ट को दोनों बटुए दे दिए।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	पुत्रौ	पुत्राः
	पुत्रौ	पुत्रान्
	पुत्राभ्याम्	पुत्रै
	पुत्राभ्याम्	पुत्रेभ्यः

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
बालकः		बालकाः
बालकम्		बालकान्
बालकेन		बालकैः
बालकाय		बालकेभ्यः

2. (क) रॉबर्टः (ख) धनहानिः कारणेन
   (ग) रुग्णाः (घ) द्वे
3. (क) रुग्णाः ; माम् ; करिमश्चिद् ; पणमंजूषा ; राशि ; एव
4. (अ) समानार्थकपदानि
   (क) स्वर्णपणाः — कनकपणाः
   (ख) प्रसन्नम् — मोदनम्
   (ग) पणमंजूषा — पणप्रकोष्ठम्

(घ) परिवारः कुटुम्बः

(ङ) वने विपिने

(ब) विलोमपदानि

(क) ग्रामे नगरे

(ख) अरोदीत् अहसत्

(ग) बहुकालतः अल्पकालतः

(घ) मम तव

5. (क) परस्पर मेल कीजिए।

(क) गन्तुम् (ख) लेखितुम्

(ग) क्रीडतुम् (घ) कर्तुम

(ङ) खादितुम्

(ख) (क) लेखितुम् (ख) खादितुम्

(ग) कर्त्तुम् (घ) गन्तुम्

आठवाँ पाठ :

मोबाइल फोन

संकेत : वैज्ञानिकाः ------------------------- यन्त्रम् वर्त्तते।

अर्थ—वैज्ञानिकों ने संचार साधनों में प्रतिदिन नए अविष्कार किए हैं। इनमें संदेश भेजने में अधिकतम सुविधा मिली है। मोबाइल ऐसा ही लोकप्रिय यंत्र है।

संकेत : बालाः, वृद्धाः ------------------- वार्तामग्नाः भवन्ति।

अर्थ—बालक, बूढ़े, युवक, पुरुष, महिलाएँ, नागरिक (शहरी) अथवा ग्रामवासी सभी के पास यह कान का आभूषण बना हुआ है। वाहन पर चढ़कर जाते हुए, कार्यालयों में कार्य करते हुए, रास्ते में चलते हुए सभागारों में प्रवचन सुनते हुए लोग इसकी ध्वनि सुनकर बातें करने में मग्न हो जाते हैं।

संकेत : अविवेक पूर्ण : ----------------- अव्यवस्था भवति।

अर्थ—अविवेकपूर्णः इसका प्रयोग कार्यों में व्यवधान करता है। इससे रास्तों में, संकरी गलियों में, मध्य मार्गों पर या राजमार्गों पर दुर्घटनाएँ होती हैं। सभामंडल में, सभागार में, कक्षाओं अथवा अन्य सभाओं में अव्यवस्था होती है।

संकेत : सत्यमस्ति यत् ------------------- सदुपयोगं कुर्वन्ति।

सत्य है कि अविष्कार कभी हानिकारक नहीं है किंतु उसके गलत प्रयोग से जीवन की शांति नष्ट होती है। वस्तुत: हमें यंत्र के अधीन नहीं होना चाहिए अपितु यंत्र को आपके अधीन होना चाहिए। वे ही बुद्धिमान हैं जो विज्ञान का सदुपयोग करते हैं।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	बालौ	बाला:
	बालौ	बालान्
	बालाभ्याम्	बालै
	बालाभ्याम्	बालेभ्य

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नागरिक:	नागरिकौ	
नागरिकम्	नागरिकौ	
नागरिकेन	नागरिकाभ्याम्	
नागरिकाय नागरिकाभ्याम्		

2. एक पद में उत्तर दीजिए।

(क) संचारसाधनेषु (ख) चलभाषित्रयंत्रम्

(ग) लाभदायक: (घ) जीवनस्य शान्ति नश्यति

(ङ) बुद्धिमन्त:

3. (क) वैज्ञानिका: प्रतिदिनं नवीनतमान् आविष्कारान् कुर्वन्ति।

(ख) सर्वेषां नागरिकाणां ग्रामीणाना स्त्रीणां पुरुषणां च चल भाषित्रयंत्रं कर्णभूषणं जातम्।

(ग) अविवेकपूर्ण: चलभाषित्रयंत्रस्य प्रयोगेण कार्येषु व्यवधानं भवति।

(घ) मार्गे चलभाषितस्य प्रयोगेण दुर्घटना भवति।

(ङ) आविष्कार: न कदापि हानिकारक:सा, किंतु तस्य दुष्प्रयोग जीवनस्य शान्ति नश्यति।

4. (क) शुद्ध (ख) शुद्ध (ग) अशुद्ध

5. (क) सर्वेषां (ख) नवीनतमान्

(ग)	बुद्धिमन्तः	(घ)	अस्या
(ङ)	लोकप्रियः		
(ख)	(क) सभागारेषु	(ख)	कदापि
	(ग) कर्णाभूषणम्	(घ)	दुष्प्रयोगेण
	(ङ) सत्यमस्ति	(च)	सदुपयोगम्

6. (क)

लकार	पुरुष	वचन
लट् लकार	प्रथम	एकवचन
लट् लकार	प्रथम	एकवचन
लट् लकार	प्रथम	बहुवचन
लट् लकार	प्रथम	एकवचन

(ख)

मूलपद	विभक्ति	वचन
प्रयोग	सप्तमी	बहुवचन
नवीन	द्वितीया	बहुवचन
ग्रामीण	प्रथमा	बहुवचन
मार्ग	सप्तमी	बहुवचन
अधीन	प्रथम	एकवचन

नौवाँ पाठ :
अन्योक्ति विलासः

संकेत : एक एव ---------------------------- पुरन्दरम्॥१॥

अर्थ–पपीहा ही एकमात्र वन में रहने वाला अभिमानी पक्षी है। या तो वह प्यासा मर जाता है या इंद्र से (पानी की) याचना करता है।।1।।

संकेत ' नितरां ---------------------------- गुणगृहीताऽसि॥२॥

अर्थ–हे कूप! तुम, मैं अधिक गहरा (और) नीचा (नीच स्वभाव) हूँ' यह सोचकर व्यर्थ खेद मत करो। तुम तो सरस हृदयी हो जो दूसरों के गुण (रस्सी) ग्रहण करते हो।।2।।

संकेत : कोकिल! ---------------------------- समुल्लसति॥३॥

अर्थ–हे कोयल! तब तक तुम इन रागरहित करील के वृक्षों पर दिन व्यतीत

करो जब तक समय अपने पर बसंत आने तक कोई रसाल (आम) नहीं आता है।।3।।

संकेत : अस्ति यद्यपि ------------------------- मानसं बिना।।४।।

अर्थ–सभी जगह यद्यपि पानी और कमल समूह (उपस्थित हो जाते) हैं किन्तु हंस का मन मानसरोवर के बिना नहीं लगता।।4।।

संकेत : द्राक्षा ------------------------------- दिवंगता!।।५।।

अर्थ–सुभाषित वचनों के रस के सामने अंगूर मलिनमुख वाले हो जाते हैं, चीनी पत्थर हो जाती है और अमृत डर कर मर/भाग जाता है।।5।।

संकेत : पिबन्ति ----------------------- धिवदैवसमंजसम्।।६।।

अर्थ–भौरे फूलों का रस और पराग पीते हैं। हंस शैवाल (कमल नाल/काई) खाते हैं। देवता के इस सामंजस्य को धिक्कार है।।6।।

अभ्यास

1. (क) वने (ख) कूपः
   (ग) आम्रः (घ) षष्ठी, एकवचन
2. (क) चातकः पिपासितः एव म्रियते किन्तु पुरन्दर दत्त जलं पिबति।
   (ख) गुणवान पुरुषः कूपः च गुणगृहीतवन्तौ स्तः।
   (ग) तृतीये श्लोके कवि कोकिल माध्यमेन नवागन्तुकं प्रति संबोधयति। सुखासमयस्य चिंतां कृत्वा दुखस्य त्यजेत्।
   (घ) सुभाषित वचनाग्रे द्राक्षा म्लानमुखी भवति।
3. (क) कः (ख) कुत्र
   (ग) कं (घ) केभ्यः
4. (क) म्रियते, याचते (ख) नीचोऽस्मीति, ; कदापि ; वृथा
   (ग) यद्यपि ; नीरज (घ) सुधा ; भीता
   (ङ) शैवालमश्नन्ति ; धिग्दैवसमंजसम्
5. (क) मानी (ख) यतः
   (ग) कोऽपि (घ) शर्करा
   (ङ) पद्मेभ्यो
6. (क) (अ) (ख) (स)

	(ग)	(ब)	(घ)	(द)
7.		लकार	पुरुष	वचन
	(क)	लट्लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
	(ख)	लट् लकार	मध्यम पुरुष	एकवचन
	(ग)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
	(घ)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन

8.	(क)	वसति	निवसति
		कोकिल	पिकः
		नीरम्	जलम्
		सुधा	अमृतम्
		भृंगाः	षड्पदाः

(ख)	पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्	चातकः
	अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरज मण्डितम्	कूपः
	द्राक्षा म्लानमुखी जाता शर्करा चाश्मतां गता	सुभाषितम्
	कोऽपि रसाल समुल्लसति	कोकिलः

9. नीरं ; अस्ति ; मानसं

दसवाँ पाठ :
सेवा का परिणाम

संकेत : अपराह्ने ------------------------------ स्थापयत्।

अर्थ–दोपहर को विद्यालय से आकर रमा ने देखा कि घर के दरवाजे के पास एक चिड़िया का बच्चा गिर गया है। वह घायल था। रमा उसे उठाकर अपने घर ले गई। रमा ने अपने दोनों हाथों से चिड़िया के बच्चे का एक घोंसला बनाया और पुनः उस घोंसले में बच्चे को बैठा दिया/रख दिया।

संकेत : सा प्रतिदिनं ------------------------ भूत्वा उत्पतत्।

अर्थ–उसने रोजाना शिशु का पोषण किया। धीरे-धीरे वह बच्चा स्वस्थ हो गया। एक दिन रमा ने अनुभव किया–यह शिशु स्वस्थ होते हुए भी मन से अस्वस्थ है। वह भूख से पीड़ित होगा यह मानकर रमा चिंतित हुई। पुनः रमा ने अनुभव किया

अनुमानत: (संभव है) यह बच्चा बंधनयुक्त वातवरण को देखकर अशान्ति को अनुभव करता है। अत: सुबह रमा ने उस घोंसले को उठाकर खिड़की में रख दिया। दूसरे दिन रमा को ज्ञात हुआ कि वह बच्चा स्वस्थ होकर उड़ गया।

संकेत : दिनात् दिनं ------------------------- मुक्तां ददामि।''

अर्थ–दिन पर दिन व्यतीत हुए। एक दिन सुबह रमा ने खिड़की में अल्प आवाज सुनी। उसने देखा और बोली–''ओह! यह तो वही चिड़िया का बच्चा है।' अब वह बड़ा हो गया है। आज वह चूँ–चूँ बोल रहा/चहचहा रहा था। उसे देख कर रमा मन से प्रसन्न हो गई। उसने रमा को नहीं भुलाया था। उसके मुँह में एक मोती था। वह चोंच फैलाकर मोती को रमा के लिए देकर उड़ गया (और जाते/जाते वह बोला–धन्यवाद रमा! तुम्हारे सेवा के परिणाम में यह मोती दे रहा हूँ।''

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चटकाया:		
	चटकयो:	चटकानाम्
	चटकयो:	
हे चटके		

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	मुक्ताभ्याम्	
मुक्ताया:		
	मुक्तयो:	
हे मुक्ते!		हे मुक्ता:!

2. (क) बालचटका
   (ख) स्वस्थम्
   (ग) अपरेस्मिन दिवसे
   (घ) बालखग:
   (ङ) मुक्तां

3. (क) रमा बालचटकायै नीडम् अरचत्।
   (ख) एकदा रमा अनुभवत्–अयं शिशु स्वस्थीभूतोपि मनसा अस्वस्थ: अस्ति।

(ग) बालचटका विषये रमा अनुमानयत् अनुमानतः अयं खगशिशुः बंधनयुत–वातावरणं दृष्ट्वा अशान्तम् अनुभवति।

(घ) प्रातः गवाक्षे रमा खगशिशुम् अपश्यत् अवदत् च–"ओह! अयं तु सैव बालखगः अस्ति।"

(ङ) चटका रमां प्रति अवदत्–धन्यवाद रमा! तव सेवाफले अहम् इयं मुक्तां ददामि।

4. (क) अपराह्ने विद्यालयात् आगत्य रमा एकां बालचटकाम् अपश्यत्।

(ख) सा रमा आसीत्।

(ग) सा प्रतिदिनं शिशुं पोषयत्।

(घ) चटका रमायै एकां मुक्ताम् अददात्।

(ङ) सा तूष्णीम् अतिष्ठत्

6. (क) *(ii)* रमा अनुभवति।

(iii) चटका मुक्तां ददाति।

(iv) सा पश्यति।

(v) सा बालचटका न उत्पतति।

(ख) *(i)* बालचटकाः

(ii) रमाभ्यः

(iii) ताः

(iv) ते

7.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)		विद्यालयाभ्याम्	विद्यालयेभ्यः
(ख)		घायलौ	घायलाः
(ग)		आगच्छताम्	आगच्छन्
(घ)		गवाक्षयोः	गवाक्षेषु
(ङ)		रमे	रमाः

ग्यारहवाँ पाठ :
काव्यों शास्त्रों में कवि

संकेत : कविषु कालिदासः ------------------------ श्रेष्ठ अस्ति।

अर्थ—कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है। इसके नाटकों में शकुन्तला नाटक रमणीय है। शकुन्तला नाटक के अंकों में चतुर्थांक (चौथा अंक) श्रेष्ठ है। खण्डकाव्यों में मेघदूत काव्य श्रेष्ठ है।

संकेतः महाकाव्येषु -------------------------------- ग्रामे अभवत्।

अर्थ—महाकाव्यों में सूरसागर महाकाव्य श्रेष्ठ है। रसों में वात्सल्य रस श्रेष्ठ है। वात्सल्य रस के पिता सूरदास है। सूरदास वृन्दावन में रहते थे। सूरदास का जन्म मथुरा के समीप रुनकता गाँव में हुआ।

संकेत : महादेव्या ---------------------------- कवयित्री आसीत्।

अर्थ—महादेवी का जन्म फर्रुखाबाद नगर में हुआ। ये एम०ए० की कक्षा में संस्कृत विषय में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुईं। दर्शन में, संगीत शास्त्र में, चित्रकला में इनकी महती अभिरुचि थी। ये छायावाद रहस्यवाद के कवियों में प्रमुख कवयित्री थीं।

अभ्यास

1. (क) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति।
   (ख) शकुन्तला नाटके अंकेषु चतुर्थोऽकः श्रेष्ठ अस्ति।
   (ग) महाकाव्येषु सुरसागरः महाकाव्यः श्रेष्ठः अस्ति।
   (घ) सूरदासः वात्सल्य–रसस्य जनकः अस्ति।
   (ङ) छायावादेषु कविषु महादेवी प्रमुख कवयित्री आसीत्।
2. (क) अयं ; किशोरः
   (ख) मथुरा नगरे ; कारागृहे
   (ग) अभिनये ; प्रयाग
   (घ) स्वयं करें।
3. (क) गिरिराजः सप्तवादने उत्तिष्ठति।
   (ख) नायकेषु अमिताभः श्रेष्ठः अस्ति।
   (ग) तस्य जन्म उत्तरप्रदेशे अभवत्।

(घ) गृहस्य समीपे उद्यानम् अस्ति।

(ङ) स: गोकुल नगरे वसति।

4. (क) काव्येषु क: काव्य: श्रेष्ठ: अस्ति।

(ख) शास्त्रेषु ज्योतिर्विज्ञान: श्रेष्ठ: अस्ति।

(ग) दीपके तैलम् अस्ति।

(घ) रामयो: इयं विथिका अस्ति।

(ङ) बालकयो: मध्ये विवाद: अभवत्।

बारहवाँ पाठ :

अकेले मत जाओ

(गंगा के किनारे एक गाँव में धर्मशील नाम का एक ब्राह्मण रहता था।)

ग्रामवासी – विद्वानों में श्रेष्ठ ब्राह्मण को नमस्कार है।

ब्राह्मण – स्वस्ति, कल्याण होवे।

(पंडिताई करके उसका जीवकोपार्जन होता था)

एक दिन ब्राह्मण की पत्नी ब्राह्मण से बोलती है–

पत्नी – स्वामी् यह निर्धनता कब जाएगी? आज तो व्रत अथवा उपवास ही करना होगा।

ब्राह्मण – चिंता मत करो प्रियंवदा! मैं शीघ्र ही भिक्षा के लिए जाऊँगा, भीख माँगूगा और उसे लाऊँगा।

पत्नी – तो जल्दी जाओ। पेट में चूहे कूद रहे हैं। भीख लाओ और भूख मिटाओ।

(धर्मशील उठकर भीख माँगने के लिए जाना चाहता है। दरवाजे पर पहुँचकर वह बोलता है।)

ब्राह्मण – प्रियंवदा! मैं शीघ्र जाता हूँ और लाता हूँ।

पत्नी – स्वामी! रुको! अकेले मत जाओ।

ब्राह्मण – डरना बेकार है। इस रास्ते में डर नहीं है। अत: मैं अकेला ही जाऊँगा।

पत्नी – यदि जाना चाहते हो तो इस कुत्ते को पकड़ो (और) इसे लेकर जाओ।

ब्राह्मण – जैसे तुम कहती हो वैसा करता हूँ।

(तब धर्मशील उस कुत्ते को लेकर चल दिया। वह रास्ते में चलने से थककर एक पेड़ के नीचे बैठ जाता है।)

ब्राह्मण – (सोचते हुए) ओह! बड़ी गर्मी है। अतः कुछ समय के लिए यहीं बैठता हूँ।

ब्राह्मण पहले बैठता है बाद में वृक्ष के नीचे सो जाता है। दैव योग से कोई साँप वहाँ आया। कुत्ता उस साँप को देखता है।

कुत्ता – ओह! यह साँप मेरे स्वामी को डस रहा है। मैं शीघ्र मारता हूँ।

(साँप उस कुत्ते के द्वारा मारा जाता है। जागने पर ब्राह्मण सब कुछ देखता है। वह कुत्ते से कहता है–'प्रिय मित्र! इधर आओ। मैं तुम से प्यार करता हूँ। मेरी पत्नी ने सत्य कहा है–'पुरुष द्वारा किसी को भी सहायक बनाना चाहिए। अकेले ही (कोई कार्य) नहीं करना चाहिए। वह ब्राह्मण प्रसन्न होता हुआ कुत्ते के साथ चला गया।

अभ्यास

2. (क) निर्धनता (ख) चिन्तां मा कुरु
   (ग) कुक्कुरः (घ) सर्पम्
   (ङ) कुक्कुरस्य कृत सहायतां पश्यति

3. (क) व्रतोपवासैव (ख) मूषकाः
   (ग) भयं (घ) कुक्कुरं
   (ङ) कुक्कुरेण

4.

	लिंग	विभक्ति	वचन
(क)	नपुंसकलिंग	चतुर्थ	एकवचन
(ख)	नपुंसकलिंग	प्रथमा/द्वितीया/सप्तमी द्विवचन/द्विवचन/एकवचन	
(ग)	पुंल्लिंग	सम्बोधन	एकवचन
(घ)	नपुं०/पुंल्लिग	षष्ठी	एकवचन
(ङ)	पुंल्लिग	द्वितीया	एकवचन